विगत तीन दशकों के प्रमुख समकालीन राजस्थानी चित्रकारों की कला का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ0 बी.आर. आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा
की चित्रकला विषय की पीएच.डी. उपाधि
हेतु प्रस्तावित शोध प्रबन्ध की
संशोधित रूपरेखा

सन् 2017

निर्देशिका

डॉ. इन्दु जोशी
अध्यक्ष
चित्रकला विभाग
आगरा कॉलेज, आगरा

शोधार्थी

कमल किशोर कश्यप
(रजि0 नं. 355/2017 5747)

चित्रकला विभाग,
आगरा कॉलेज, आगरा

अनुक्रमणिका

1. प्रस्तावना

2. सम्बन्धित साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन

3. शोध के उद्देश्य

4. शोध की परिकल्पना

5. शोध पद्धति

6. अध्ययन का महत्व एवं क्षेत्र

7. रूपरेखा

8. संदर्भ ग्रन्थ सूची

''विगत तीन दशकों के प्रमुख समकालीन राजस्थानी चित्रकारों की कला का समीक्षात्मक अध्ययन''

प्रस्तावना

सम्पूर्ण विश्व में भारत की पहचान उसकी कला, सभ्यता, संस्कृति और परम्पराओं से होती है। भारत की संस्कृति रूपी पुष्पों के गुलदस्ते में विविध सुन्दर पुष्प भारतीय संस्कृति की सुगन्ध को सम्पूर्ण विश्व में फैलाने के साथ विश्व को आनन्दित व आकर्षित करते हैं।

उसी सुन्दर गुलदस्ते का एक पुष्प राजस्थान है। जिसका नाम आते ही राजस्थान की कला एवं संस्कृति के विविध रंग स्वतः ही मस्तिष्क एवं नेत्र पटल पर अपनी सुन्दर छवि बिखेरने लगते हैं, राजस्थान की कला एवं संस्कृति, इतिहास राजस्थान को सुदीर्घ समय से गौरवान्वित कर रही है। राजस्थान का इतिहास बहुत ही प्राचीन राजसी परम्पराओं के जीवन, वीरता एवं साहस की गाथाओं से परिपूर्ण रहा है।

राजस्थान की संस्कृति वहाँ के प्राचीन रजवाड़ों, गाँवों, साहित्य, संगीत, नृत्य, मेलों, उत्सवों, लोक जीवन एवं वहाँ की कला में झलकती है। राजस्थान की लोककला, मांडणा, 'साँझी' परम्परागत नृत्य ''घूमर'' ''कच्ची घोड़ी'', राजस्थान की रंग–बिरंगी पगड़ियाँ एवं पारम्परिक पोशाकें सभी राजस्थान की मिट्टी की चमक और मिट्टी से लगाव को दर्शाती है।

राजस्थान के गाँवों में मिट्टी के घरों पर बनी लोक कलाएँ राजस्थान की कला एवं संस्कृति का जीवन्त उदाहरण प्रस्तुत करती है। जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी गयी विरासत के रूप में आज भी समकालीन कला व कलाकरों को आकर्षित करती है।

राजस्थानी की लघु चित्रकला शैली भारत की महत्वपूर्ण कला शैलियों में से एक हैं जो अपनी परम्परागत चित्रण परम्परा से जुड़ी है। राजस्थान की लघु चित्रकला परम्परा अपने सौन्दर्य, कलात्मकता और धार्मिक विषयों के लिए जानी जाती है। राजस्थानी लघु चित्रण शैली में रेखा, रंग, भाव, संयोजन, आलंकारिकता आदि का सजीव व सुन्दर प्रयोग किया गया है। इसी कारण राजस्थानी लघु चित्र शैली एक कलाकार या कला छात्र के लिए कला को जानने व सीखने के लिए एक ज्ञानकोश के समान है। लम्बे समय से पीढ़ी दर पीढ़ी अनेक कलाकार इस कला शैली की सेवा में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर चुके हैं।

नवीन प्रयोगवादी समकालीन राजस्थानी कलाकार जो एक नयी आधुनिकतावादी विचारधारा, मशीनीकरण एवं अभिव्यक्ति के नये–नये साधनों के दौर से गुजर रहे हैं। वह अपनी कला अभिव्यक्ति में परम्परागत लघु चित्रण शैली को भी नये रूप में जीवन्त कर रहे हैं।

राजस्थानी समकालीन कलाकारों ने राजस्थानी चित्रों एवं राजस्थान के अनेक पहलुओं को आत्मसात कर अपने नवीन कला विचारों एवं प्रयोगों के साथ जोड़कर राजस्थान एवं अपनी कला चित्रण को एक नया रूप प्रदान करने में सफलता प्राप्त की है।

मेरा यह शोध कार्य इसी प्रकार के राजस्थानी समकालीन कलाकारों एवं उनकी शैली से उत्पन्न नये रूपों का समीक्षात्मक अध्ययन पर आधारित है। जिनमें समय एवं पीढ़ी के विकास और नवीन कला माध्यमों के बदलाव का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है।

राजस्थान कला की दृष्टि से एक बहुत ही धनी राज्य है जहाँ कलाकारों की एक लम्बी सूची उपलब्ध है। जो अपनी कला साधना से राजस्थान को कला जगत में शीर्ष स्थानों में शामिल करते हैं। उन्हीं समकालीन कलाकारों की तीन दशक की कला यात्रा को मैनें अपने शोध कार्य को सीमांकित व गुणवत्तापूर्ण सम्पन्न करने के लिए किया है। यह सभी कलाकार मूल रूप से राजस्थान के हैं और इनकी कला में अपनी परम्परागत कला, एवं समकालीन कला की चमक के साथ नवीन प्रयोगों का समावेश भी है। राजस्थान के सभी समकालीन कलाकारों ने राजस्थानी कला को एक नवीन क्षितिज प्रदान किया साथ ही सम्पूर्ण विश्व में अपनी एक विशेष स्थापित की है।

सम्बन्धित साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन – ''शोध ग्रन्थ''

1. **परवीन, रेशमा ''मेवाढ़ की चित्रकला में प्राकृतिक रूपों का समीक्षात्मक अध्ययन'', वर्ष 2000, डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा ।**

   उपरोक्त शोधकत्री ने अपने इस शोध ग्रन्थ में राजस्थान की उप शैली मेवाड़ की चित्रकला में प्राकृतिक सुन्दर रूपों की समीक्षा की है। इस शोध ग्रन्थ में मेवाड़ शैली में चित्रित वृक्ष, लताएं, पुष्प एवं वन उपवनों के द्वारा सम्पूर्ण चित्र की भावाभिव्यक्ति में सहायता के साथ प्राकृतिक रूपों की सुन्दर व्याख्या प्रस्तुत की है, जो मेवाड़ शैली में प्रकृति की महत्वता को दर्शाता है और साथ ही उनके चित्रण में कला तत्वों का प्रबल प्रयोग को दर्शाता है।

2. **जोशी, सुलोचना, ''राजस्थान के समकालीन एवं अमूर्त कला विद' वर्ष 2002, डॉं. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा**

   सुलोचना जोशी के द्वारा लिखित शोध ग्रन्थ में राजस्थान के समकालीन अमूर्त कलाकारों की चर्चा प्रस्तुत की है एवं राजस्थान के समकालीन अमूर्त कलाकारों के रूपों, रंगों एवं आकारों पर अध्ययन करते हुए राजस्थान की कला पर विश्व की आधुनिक कला का प्रभाव एवं समकालीन कला जगत में राजस्थान के योगदान का विवरण लिखा है।

   सुलोचना जी ने अपने इस शोध ग्रन्थ में राजस्थान के प्रमुख अमूर्त कलाकरों की शैलीगत विशेषताओं के साथ उनके कार्य करने की तकनीक की भी व्याख्या देते हुए अपने शोध कार्य को पूर्ण किया है।

3. **गुप्ता, प्रीति ''राजस्थान के रंगों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण'' वर्ष 2002, डॉं. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा ।**

   राजस्थानी कला के रंगों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण पर आधारित इस लघु शोध में शोधकत्री में सर्वप्रथम राजस्थान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का वर्णन करते हुए, राजस्थानी कला के सभी केन्द्रों के विषय में लेख प्रस्तुत किया है।

इसके उपरान्त राजस्थानी चित्रों की विषय वस्तु के आधार पर रंगों के प्रयोग का वर्णन किया है, साथ ही रंगों को बनाने की तकनीक के साथ रंगों के वर्गीकरण पर भी प्रकाश डाला है।

राजस्थानी चित्रों में रंगों के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण के लिए वर्ण विधान के आधार पर मुख्य रंग व द्वितीय रंगों की प्रकृति के अनुसार अपना लघु शोध पूर्ण किया है।

4. **डागुर, खेम सिंह ''राजस्थान के समकालीन कला के पाँच प्रेरणा स्रोत कलाविद चित्रकार'' वर्ष 2003, ललित कला संस्थान, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर।**

शोधार्थी ने अपने इस शोध कार्य में राजस्थान के समकालीन चित्रकारों में रामगोपाल विजयवर्गीय, कृपालसिंह शोखवत, देवकीनन्दन शर्मा, द्वारका प्रसाद शर्मा एवं पी.एन. चोयल के कला योगदान का वर्णन प्रस्तुत किया है। साथ ही नवीन पीढ़ी के लिए यह कलाकार किस तरह एक प्रेरणा रूप में है। इस विषय को भी स्पष्ट किया है।

5. **यादव, अनुज कुमार ''कोटा चित्रण शैली में कला के छः अंगों की पुष्टि का मूल्यांकन'' वर्ष 2006, डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा ।**

अनुज कुमार जी, ने राजस्थान की कोटा चित्रण शैली में चित्रित चित्रों का गहन अध्ययन किया और कोटा शैली के चित्रों का विश्लेषणात्मक अध्ययन भारतीय चित्रकला के छः अंगों के साथ जोड़ कर किया। जिसमें उन्होंने महसूस किया की कोटा के चित्रों में भारतीय चित्रकला के तत्वों के माध्यम से अभिव्यक्ति को सुन्दर रूप दिया गया है।

6. **मिश्रा, दीवेन्द्र कुमार ''राजस्थानी चित्रों में क्षेत्रीय संस्कृति एवं परम्पराओं का समीक्षात्मक अध्ययन'' वर्ष 2012, मंगलायतन यूनिवर्सिटी अलीगढ़।**

दीवेन्द्र कुमार जी ने अपने लघु शोध में राजस्थानी लोक जीवन एवं संस्कृति का वहाँ की कलाओं पर प्रभाव को दर्शाया है।

राजस्थान के लघु चित्रों में राजस्थानी संस्कृति और परम्पराओं का अलग–अलग क्षेत्रीय कलाओं में किस रूप में चित्रित किया गया है। इसकी समीक्षा प्रस्तुत की है। साथ ही राजस्थानी चित्रों के विषय एवं तकनीकी पक्ष के साथ शैलीगत विशेषताओं की भी व्याख्या की है।

दीवेन्द्र कुमार जी ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि राजस्थानी लघु चित्र अपनी संस्कृति व परम्परा के कितने नजदीक है।

7. **देशवाल, कावेरी ''राजस्थान की लोक संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में रामेश्वर सिंह'', वर्ष 2017 वनस्थली विश्वविद्यालय ।**

शोधकत्री कावेरी जी ने राजस्थान के इतिहास का परिचय प्रस्तुत करते हुए राजस्थान की लोक संस्कृति का वर्णन किया है। साथ ही समकालीन राजस्थानी कलाविद रामेश्वर सिंह जी के सम्पूर्ण जीवन परिचय के साथ रामेश्वर सिंह की चित्रण शैली लोक संस्कृति के पक्ष में उजागर करने का प्रयास किया है। सम्पूर्ण ग्रन्थ में रामेश्वर सिंह की कला शैली के एक पक्ष को ही लिपिबद्ध किया गया है।

शोध पत्र

1. **शेष, हेमन्त, ''राजस्थान में आधुनिक कला के पाँच दशक'' कला दीर्घा 6 अप्रैल 2003 वॉल्यूम 3**

उपरोक्त शोध पत्र में स्वतन्त्रता प्राप्ती के बाद भारतीय कला में तेजी से फैलते आधुनिकतावाद पर लेखनी प्रस्तुत की है। जिसमें राजस्थान के साठ के दशक में कार्यरत कलाकार रामगोपाल विजयवर्गीय, भूरीसिंह शेखावत, देवकीनन्दन, कृपाल सिंह शेखावत और पी.एन. चोयल जैसे चित्रकारों की कला पर आधुनिकतावाद ने गहरा असर डाला है यह स्पष्ट किया है।

इस के बाद रवि साखलकर की अमूर्त कला शैली को आधुनिक कला की देन बताते हुए राजस्थान की आधुनिक कला पर अपना लेख तैयार किया है।

सम्पूर्ण लेख में राजस्थान के अनेक आधुनिक कलाकारों की चर्चा की है। जो लगभग पूर्ण रूप से आधुनिकता वाद को दर्शाता है।

2. **पवार, डॉ. वसुन्धरा, ''राजस्थानी चित्रकला में रंग संयोजन'' International Journal of Research - Grantaalayahi 2014**

इस लेख में राजस्थानी शैली के रंग संयोजन को राजस्थान की उपशैलियों की चर्चा के साथ प्रस्तुत किया गया है। जिसमें राजस्थानी चित्रों में रंगों की विशेषता एवं संयोजन साथ ही रागमाला, भागवत पुराण, ढोलामारू के चित्रों के उदाहरण के साथ रंगों के सुन्दर संयोजन को लेखनी के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

3. **कडोडे, उज्जवल एस, ''राजस्थानी लघुचित्रों के परिप्रेक्ष्य में रंगों की दार्शनिक भूमिका'' स्टेट इन्स्टीट्यूट आफ फाईन आर्टस, रोहतक 2014,**

राजस्थानी लघु चित्रों में राधा कृष्ण की लीलाओं से सजे वातावरण को रंगों के माध्यम से जीवन्त रूप प्रदान करने का प्रयास किया गया है। एवं रंगों की स्वाभाविक व दार्शनिक अभिव्यक्ति के माध्यम से सम्पूर्ण वातावरण को एक कथा के रूप में प्रस्तुत करते हुए रंगों के सुन्दर संयोजन की व्याख्या इस लेख में दर्शाने की कोशिश की गयी है।

प्रत्येक रंग की अपनी एक भाषा व अभिव्यक्ति होती है। जिसका उपयोग राजस्थानी लघु चित्रकारों एवं समकालीन राजस्थानी कलाकरों ने पूर्ण कुशलता के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

4. **जोशी, प्रभु ''समकालीन कला का युवा परिदृश्य'' कला दीर्घा 2015, अंक 31**

समकालीन युवा कलाकार पीढ़ी एक नवीन युग में प्रवेश कर चुकी है जहाँ अपनी बात को प्रस्तुत करने के माध्यमों की संख्या दिन प्रतिदिन नवीन शिखर को प्राप्त करती जा रही है और इसके कारण कला का नया रूप सामने आ रहा है। कई कलाकार अपनी परम्परागत शैली से प्रभावित है और कई अन्य जगह सें इसी बात को प्रभु जोशी जी ने अपनी लेखनी के माध्यम से इस लेख में प्रस्तुत किया है।

सम्बन्धित साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन करने के उपरान्त मैंने यह अनुभव किया कि राजस्थानी चित्रण शैली पर अनेक शोध ग्रन्थ, शोध पत्र, पुस्तकें आदि उपलब्ध है परन्तु किसी में भी राजस्थानीय समकालीन कला के नीवन रूपों का विस्तृत ज्ञान उपलब्ध नहीं हो पाया। इसलिए मेरा यह शोध ग्रन्थ राजस्थानी कलाकारों के विकास क्रम का समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत करते हुए राजस्थान की कला के नवीन रूपों की समीक्षा कर ज्ञान के इस रिक्त स्थान को पूर्ण करने का प्रयास करेगा।

शोध के उद्देश्य

यह शोध कार्य राजस्थान एवं राजस्थान के समकालीन प्रमुख कलाकारों पर आधारित है। अतः इसे पूर्ण करने हेतु राजस्थान के कला इतिहास के विकास क्रम का अध्ययन किया जायेगा एवं प्रमुख समकालीन राजस्थानी कलाकारों का अध्ययन किया जायेगा। इसी क्रम में शोधकर्ता द्वारा शोध के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित निर्धारित किये गये हैं –

1. राजस्थान की कला का अध्ययन।
2. राजस्थान की समकालीन कला एवं कलाकारों का अध्ययन।
3. समकालीन राजस्थानी प्रमुख कलाकारों की कला के विषयों का अध्ययन।
4. समकालीन राजस्थानी प्रमुख कलाकारों की कार्य शैली का अध्ययन।

5. राजस्थान के प्रमुख समकालीन कलाकारों की कृतियों का कला के तत्वों एवं संयोजन के सिद्धान्तों के आधार पर अध्ययन।
6. राजस्थान के प्रमुख समकालीन कलाकारों के कार्यों का तुलनात्मक अध्ययन।
7. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किये जाने वाले नवीन प्रयोगों की सम्भावनाओं का अध्ययन।

शोध की परिकल्पना

आरम्भ से ही एक कला छात्र के रूप में मेरे हृदय में राजस्थानी लघु चित्रों एवं राजस्थानी कला इतिहास के प्रति एक कलात्मक व धार्मिक लगाव रहा है। राजस्थानी चित्रों की सुन्दर रंग योजना संयोजन रेखाओं की कोमलता आकृतियों का सजीव रूप एवं प्राकृतिक चित्रण सभी ने मुझे ही नहीं वरन सम्पूर्ण विश्व को अपनी ओर आकर्षित किया है।

यह मेरा सौभाग्य है कि राजस्थानी लघु चित्रों को देखने का मुझे अवसर मिला। इन चित्रों के प्रति मेरे लगाव ने मुझे धीरे–धीरे इनके प्रति ज्ञान में वृद्धि करने को प्रेरित किया। इसकी क्रम में मैनें राजस्थान के कई ऐसे कलाकारों के चित्रों को भी देखा जो राजस्थानी कला से प्रेरित होकर राजस्थानी लघु चित्रों के कला तत्वों को आधार बनाकर अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम से नवीन कला रूपों का सृजन कर रहे हैं। राजस्थानी लघु चित्रों के प्रति मेरे लगाव के कारण समकालीन कलाकरों के इन नवीन रूपों का विश्लेषण करने के लिए मैं प्रेरित हुआ।

साथ ही मेरे मस्तिष्क में कई प्रश्न उठे जिनके उत्तरों की तलाश के लिये मैनें इस शोध कार्य को अपने विषय के रूप में चुनने का निश्चय किया।

इस शोध कार्य के सही मार्गदर्शन एवं उचित कार्य प्रणाली चयन हेतु परिकल्पना तैयार की गयी जिसमें सर्वप्रथम राजस्थानी कला इतिहास का गहन अध्ययन किया जायेगा। उसके उपरान्त समकालीन कलाकारों की कला शैली व तकनीकों का अध्ययन कर समीक्षात्मक व्याख्या के माध्यम से अपने प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास किया जायेगा।

शोध पद्धति

किसी भी शोध कार्य को सही दिशा में पूर्ण करने के लिए उचित शोध पद्धति का चयन एक महत्वपूर्ण कार्य होता है। उसी बात को ध्यान में रखते हुए अपने शोध कार्य के लिए निम्नलिखित शोध पद्धति का प्रयोग किया जायेगा।

- वर्णनात्मक शोध पद्धतिः –

  1. विकासात्मक अध्ययन।
  2. सर्वेक्षणात्मक अध्ययन।

- ऐतिहासिक अध्ययन : अपने शोध कार्य के ऐतिहासिक पक्ष को जानने के लिए शोधकर्ता द्वारा शोध पद्धति के निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा।

  1. अवलोकन द्वारा
  2. प्रश्नावली द्वारा
  3. साक्षात्कार द्वारा

- तुलनात्मक शोध पद्धति

- **शोधकार्य पूर्ण करने हेतु आँकड़ों का संकलन।**

  प्राथमिक स्त्रोत के रूप में प्रयोग किये जाने वाले उपकरण –

  1. समकालीन राजस्थानी कलाकरों का साक्षात्कार।
  2. समकालीन राजस्थानी कलाकारों के चित्रों का अवलोकन।

  द्वितीय स्त्रोत के रूप में प्रयोग किये जाने वाले उपकरण –

  1. पुस्तकें
  2. पत्र–पत्रिकायें
  3. शोध ग्रन्थ
  4. शोध पत्र एवं लेख
  5. समाचार पत्र
  6. इन्टरनेट

अध्ययन का महत्व एवं क्षेत्र

राजस्थानी चित्रकला विश्व कला जगत में अपना एक विशिष्ट स्थान रखती है। इसकी अनेकों उप शैलियाँ भी अपनी विशिष्टता के लिए विश्व विख्यात है।

अपने समय से लेकर आज तक यह कला परम्परा अनवरत रूप में अनेक कलाकारों को अपनी ओर आकृष्ट करती रही है तथा प्रेरणा स्रोत बनी है।

वर्तमान भारतीय कला में भी यह कला प्रेरणादायी स्रोत के रूप में कलाकारों की कृतियों में भिन्न–भिन्न रूप में स्थान पा रही है। समकालीन कला का अध्ययन करते समय तथा विशिष्ट रूप से राजस्थान की समकालीन कला का अध्ययन करते समय मैनें पाया कि आज कलाकार जिस प्रकार राजस्थानी कला को अपने प्रयोगवाद में समाविष्ट कर नवीन सृजन श्रृंखला का विकास कर रहे हैं । इसी से प्रभावित होकर इसे मैंने अपने शोध का विषय बनाया है।

1. राजस्थानी चित्रकला के इतिहास का गहन अध्ययन।
2. दृश्य कला के तत्वों के आधार पर समकालीन राजस्थानी कलाकारों के कार्यों का अध्ययन।
3. संयोजन के सिद्धान्तों के आधार पर समकालीन राजस्थानी कलाकारों के कार्यों का समीक्षात्मक अध्ययन।
4. समकालीन राजस्थानी कलाकारों में अभिव्यक्ति के बदलते माध्यमों के महत्व का समीक्षात्मक अध्ययन।
5. समकालीन कलाकारों की कलाकृतियों का शैलीगत एवं विषयगत विवेचन।
6. कलाकारों के लघु चित्रण प्रभाव एवं रूपों के साथ किये गये प्रयोगों का अध्ययन।
7. राजस्थानी प्रमुख समकालीन कलाकारों की कला का तुलनात्मक अध्ययन।
8. वर्तमान कला जगत में राजस्थानी समकालीन कलाकारों के योगदान का अध्ययन।

"विगत तीन दशकों के प्रमुख समकालीन राजस्थानी चित्रकारों की कला का समीक्षात्मक अध्ययन"

संशोधित रूपरेखा

1. राजस्थानी कला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।
2. राजस्थान की समकालीन कला एवं प्रमुख चित्रकार।
3. राजस्थान के प्रमुख समकालीन कलाकारों के चित्रों का समीक्षात्मक अध्ययन।

   3.1 विषयगत

   3.2 शैलीगत
4. प्रमुख समकालीन राजस्थानी कलाकारों के चित्रों का दृश्य कलाओं के तत्वों के आधार पर अध्ययन।
5. राजस्थान के प्रमुख समकालीन कलाकारों के चित्रों का संयोजन के सिद्धान्तों के आधार पर अध्ययन।
6. प्रमुख समकालीन राजस्थानी कलाकारों के चित्रों का तुलनात्मक अध्ययन।
7. प्रमुख समकालीन राजस्थानी कलाकारों का भारतीय समकालीन कला में योगदान।
8. उपसंहार

   सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

   चित्र सूची

सन्दर्भ ग्रन्थ सँची

हिन्दी की पुस्तकें

1. अग्रवाल, वासुदेव शरण – कला और संस्कृति, प्रयाग–1953 भारतीय कला, पृथ्वी प्रकाशन, वाराणसी 1964
2. अग्रवाल, आर.ए.–भारतीय कला विलास, इन्टरनेशनल पब्लिकेशन्स हाउस, 1979
3. अग्रवाल, गिर्राज किशोर – रूपांकन संजय पब्लिकेशन्स, आगरा 2015
4. गहलोत, जगदीश – राजस्थान के राजवंशों का इतिहास, राजस्थान साहित्य मन्दिर जोधपुर 1989
5. गुप्त, जगदीश – भारतीय कला के पद चिन्ह, नेशनल पब्लिकेशन्स हाउस, दिल्ली 1961
6. गैरोल, वाचस्पति – भारतीय चित्रकला का इतिहास, लोक भारतीय प्रकाशन इलाहाबाद 1972
7. वर्मा, अविनाश बहादुर – भारतीय चित्रकला का इतिहास प्रकाश बुक डिपो, बरेली 1995
8. प्रताप, रीता – भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 2011.
9. अग्रवाल, डॉ. गिर्राज किशोर – कला और कलम, अशोक प्रकाशन मन्दिर अलीगढ 2006
11. उपाध्याय, भगवत शरण – भारतीय कला की भूमिका पीपुल्स पब्लिसिंग हाउस दिल्ली 2008
12. साखलकर, रवि, – आधुनिक चित्रकला का इतिहास राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर 2008

13. चतुर्वेदी, डॉ. ममता – समकालीन भारतीय कला, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर 2010

14. भारद्वाज, विनोद – वृहद आधुनिक कला कोश, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2009

ENGLISH BOOKS

1. Archer, W.G. Indian Painting in Bundi And Kota London, Her Majesty's Stationery Office, 1959.

2. Agarwal, Madhu Prasad- Mar¡ar Ki Chitrakala (Marwar School of Painting), New Delhi.

3. Anand, Mul Raj-Album of Indian Painting, New Delhi, Lalit Kala Akademic 1973.

4. Bhavanendran, N. Interpretation of Indians Art, New Delhi, Heritage Publishers 1991.

5. Brown, P. - Indian Paintion Under the Mugalr A.D. 1550 to A.D. 1750 Oxfor4d, Te Claredon Pres 1924.

6. .....A History of Indian Painting Vol-4, Rajasthani Traditions, New Delhi, Abhinav Publication, 1994.

7. Crill Rosemary - Contemporay Indian Art other Realities, Mumbai; Mg. Publication 2002.

8. Dalmia, Yasodhara-Contemporary Indian Art : Other Relitier, Mumbai Publication, 2002.

9. Parde, Ram- Painting As A Source of Rajasthan History, Jaipur, Publishing house 1985.

शोध ग्रन्थ

1. देशपाल, कावेरी ''राजस्थान की लोक संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में रामेश्वर सिंह, वनस्थली विश्वविद्यालय, 2017

2. जाटव, गिरिराज ''मेवाड़ भू भाग की पारम्परिक कलाएँ एक समीक्षात्मक अध्ययन रचनात्मकता के परिवेश में'' मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय 2017.

3. कुमार, विनीत ''प्रारम्भिक राजस्थानी शैली में चौरपंचाशिका लघु चित्रों का विश्लेषणात्मक अध्ययन'' चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ 2015

4. डागुर, खेमराज – ''राजस्थान के समकालीन कला के पाँच प्रेरणा स्रोत कलाविद चित्रकार'' ।

5. गुप्ता, सुनीता ''भारत की समकालीन चित्रकला में अद्भुत एवं नवीन तत्वों का चित्रण'' डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा 1998 ।

6. जौहरी, श्रीमती सरिता, ''राजस्थानी चित्रों में साहित्य एवं संगीत का समन्वय'' डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा 1990

7. परवीन, रेशमा ''मेवाड़ की चित्रकला में प्राकृतिक रूपों का समीक्षात्मक अध्ययन'' डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा 2000

8. जोशी, सुलोचना ''राजस्थान के समकालीन एवं अमूर्त कला विद'' डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा 2002

9. कुमारी, गिरिजा ''राजस्थानी लघु चित्रों में पुष्प चित्रण'' (लघु शोध) मंगलायतन यूनिवर्सिटी अलीगढ़ 2011.

10. प्रिंजय, ''राजस्थानी शैली में शबीह चित्रण एक चित्रात्मक अध्ययन'' (लघु शोध) मंगलायतन यँनिवर्सिटी अलीगढ़ 2009

शोध पत्र/पत्रिकाएँ

1. कला दीर्घा – अप्रैल 2002 अंक – 4

2. कला दीर्घा – अप्रैल 2003 अंक – 3

3. कला त्रैमासिकी (सौन्दर्यबोध विशेषांक) दिसम्बर 2002

4. कला त्रैमासिकी – अप्रैल 2000

5. कला चिन्तन (कला त्रैमासिक संकलन)

6. Artistic Narration, A Journal for Visual & Performing Art 2011 Vol. II.

7. International Journal of Research Grantaalayahi 2014

WEB-SITES

1. http://nmi.gov.in/departmentshoaresearchmamore.htm

2. http://www.rietberg.ch/media/804233/technique_of_indian_painting.pdf

3. http://www.nationalmuseumindia.gov.in/departments-miniature-paintings.asp?lk=dp3

4. https://en.wikipedia.org/wiki/Ram_Gopal_Vijayvargiya

5. https://hi.wikipedia.org/wiki/

6. http://formsofdevotion.org/artist/vinay-sharma/

7. http://www.saffronart.com/artists/charan-sharma

8. http://www.dileepschauhan.com/biodata.html

9. https://en.wikipedia.org/wiki/Rakesh_Vijay

"विगत तीन दशकों के प्रमुख समकालीन राजस्थानी चित्रकारों की कला का समीक्षात्मक अध्ययन"

1. शोध का विषय	–	**"विगत तीन दशकों के प्रमुख समकालीन राजस्थानी चित्रकारों की कला का समीक्षात्मक अध्ययन"**
2. शोधार्थी का नाम	–	कमल किशोर कश्यप
3. विषय / संकाय	–	चित्रकला / कला विभाग, आगरा कॉलेज, आगरा
4. पंजीकरण संख्या	–	355 / 2017 5747
5. निर्देशिका का नाम	–	डॉ. इन्दु जोशी
6. पद	–	अध्यक्षा – चित्रकला विभाग, आगरा कॉलेज, आगरा
7. शोध संस्थान का नाम	–	आगरा कॉलेज, आगरा ।
8. कुल पृष्ठ संख्या	–	16
9. ईमेल	–	kamalkishore8007@gmail.com
10. फोन / मोबाइल	–	9639368178, 8979146362
11. पता	–	83, एल.आई.जी., कैलाशपुरी, आगरा 282002